एक सींग वाला भारतीय गैंडा

असम के काज़ीरंगा राष्ट्रीय उद्यान में एक सींग वाले भारतीय गैंडों की 70 फ़ीसदी संख्या रहती है। यह संकटग्रस्त प्रजाति शिकारियों के निशाने पर है क्योंकि इस गैंडे के सींगों की दुनिया के अवैध बाज़ार में बड़ी मांग है।

एक किलोग्राम सींग की कीमत 80 हज़ार रुपये तक मिलती है। गैंडे के सींगों का इस्तेमाल कई एशियाई दवाओं में होता है। गैंडों को निर्दयतापूर्वक मारा जाना जारी है लेकिन बेहतर सुरक्षा उपायों तथा भारतीय वन्यजीव संस्थान, यू.एस. फ़िश एंड वाइल्ड लाइफ सर्विस और स्थानीय बचाव समूहों के सहयोग से इस संकटग्रस्त प्रजाति का अस्तित्व बचाने में मदद मिली है।

एवन जुड़का

असम के काज़ीरंगा राष्ट्रीय उद्यान में एक सींग वाले गैंडों का जोड़ा।

भारत में एक सींग के गैंडे के संरक्षण में बड़ी सफलता मिली है। वर्ष 1905 में काज़ीरंगा में एक सींग के गैंडों की संख्या घटकर 20 रह गई थी। वर्ष 2006 में कड़े संरक्षण उपायों के चलते इनकी संख्या 1850 तक पहुंच गई है। असम के वन एवं पर्यावरण विभाग की इंडियन राइनो परियोजना 2020, यू.एस.फिशर एंड वाइल्डलाइफ सर्विस और फ़्लोरिडा सिथत इंटरनेशनल राइनो फ़ाउंडेशन मिलकर असम में जंगली गैंडों की संख्या वर्ष 2020 तक 3000 तक ले जाने के प्रयास में हैं। वर्ष 1994 में यू.एस. फ़िशर एंड वाइल्डलाइफ़ सर्विस के तहत अमेरिकी कांग्रेस ने गैंडों और चीतों के संरक्षण के लिए कोष स्थापित किया। वर्ष 2006 में कांग्रेस द्वारा आवंटित 15 लाख डॉलर और मेज़बान देशों और पर्यावरण समूहों द्वारा बराबर की राशि के जरिये गैंडों और चीतों के संरक्षण की 44 अहम परियोजनाओं के लिए वित्तीय मदद दी गई।

अनुदान शिकार रोकने की योजनाओं, पारिस्थितिकी प्रबंधन, वनकर्मियों के बीच बेहतर संचार संपर्क के उपकरण, प्राकृतिक अभयारण्य विकसित करने, वन्यजीव संरक्षण और निगरानी, मानव-वन्यजीव टकराव रोकने, जन जागरूकता और अन्य संरक्षण प्रयासों के लिए दिया जाता है। **- शा. खं.**